पुरष्कृत लेख (प्रथम पुरस्कार)

नीर और नारी

- श्रीमती अन्जु चौधरी
वरिष्ठ शोध सहायक

21 वीं सदी के आरम्भ में ही पूरी दुनिया को जल की भारी कमी का सामना करना पड़ रहा है. कुल 10 से 20 करोड़ लोगों को ही शुद्ध जल की प्रयाप्त मात्रा उपलब्ध है. इसके मुख्य कारण, बढ़ती जनसंख्या और जल के बढ़ते प्रदूषण द्वारा जल स्रोतों की कमी हैं. जल की कमी से प्रकृति तो प्रभावित होती ही है. नारी पर भी इसका प्रभाव पड़ रहा है. नारी जल की मुख्य उपभोक्ता है उसका प्रत्येक कार्य जल के इस्तेमाल द्वारा ही पूर्ण होता है. अतः आज के परिवेश में नारी और जल के द्रोत्र में उसकी भूमिका को गहराई से आँका जाना चाहिए.

नीर और नारी का सम्बन्ध

युगों-युगों से नीर और नारी में गहरा संबंध रहा है. एक ओर जहाँ नारी जीवन दायनी है वहीं जल जीवन का आधार है. नीर और नारी दोनों एक दूसरे पर पूर्णतः निर्भर हैं. नारी का कार्य बिना जल के सम्भव नहीं और नीर का प्रबन्धन बिना नारी के सवंभव नहीं. भारत में तो नीर से भरी अधिकतर नदियों के नाम तक नारी पर ही रखे गये हैं. जैसे गंगा, यमुना, कृष्णा, कावेरी, सरस्वती, अमेजन. कवियों और लेखकों ने तो नदियों को माँ का स्थान दिया है इसका एक उदाहरण एक लेखक की पुस्तक "ओ माँ नर्मदा" है. अधिकतर देशों में नारी ही जल की मुख्य उपभौक्ता है. वही खाना बनाती है, वहीं कपड़े धोती है वही सफाई करती है. अतः नारी ही सबसे उत्तरदायी व्यक्ति है. और चार्ल्स डार्विन के अनुसार - " सबसे उत्तरदायी व्यक्ति ही बदलाव ला सकते हैं". अतः आज के युग में नारी ही वह शक्ती है जो समाज को बदलने की क्षमता रखती हैं. वही आने वाली पीढ़ी को जल की बचत का, उसके प्रदूषण को रोकने का पाठ पढ़ा सकती है. आज नारी की भूमिका अहम हो गयी है.

नीर और नारी की भूमिका

आज अधिकतर परियोजनाएँ जो जल के प्रबन्धन से जुड़ी हैं, इसलिए विफल हो जाती हैं क्योंकि उसमें नारी शक्ति का अभाव है. कुछ तो निरक्षरता एवं कुछ हमारे रीति रिवाजों ने नारी की भूमका को जल के क्षेत्र में सीमित कर दिया हैं. आज विश्व भर में ऐसे प्रयास किये जा रहे हैं जिससे नारी जल के क्षेत्र में अपना मत रख सके और जल संबंधी समस्याओं को जानकर उसके समाधान के लिये योजनाएं बना सके जिसे क्रियान्वित कर इस समस्या से निपटा जा सके.

इसी को देखते हुए तमिलनाडु सरकार ने सिंचाई के प्रबन्धन में " जल स्रोतों के संगठन" परियोजना (जो की विश्व बैंक द्वारा सहायता प्राप्त है।) में महिला सदस्यों की संख्या को बढ़ाया है. यू०एन०द्वारा भी ऐसी बहुत सी परियोजनाएं चलायी जा रही हैं. इसके बावजूद इस क्षेत्र में बहुत सी ऐसी समस्याऐं हैं. जिन्होंने नारी की भूमिका को नगण्य कर दिया है. और आज भी नारी कहीं कहीं पर तो दिन के आधे से ज्यादा भाग को जल के भण्डारण एवं उसको प्रदूषण रहित कर पीने योग्य बनाने में ही अर्पित कर देती है. इसका सीधा सा प्रभाव उनके विकास पर पड़ता है , जो समय की कमी. के कारण कम होता चला जाता है.

नीर और नारी की समस्यायें

जल संबंधित क्षेत्र में नारी के योगदान को निम्न कुछ समस्याओं ने प्रभावित किया है.

1. नारी पर कार्य भार का अधिक होना - इसके चलते जल संबंधी समस्याओं को जानने व उसका समाधान सोचने का वक्त ही नहीं मिलता.
2. जल संबंधी परियोजनाओं में नारी की सीमित भागीदारी - इसके कारण नारी न तो अपने निर्णय देने का अधिकार रखती है न ही उसे अपनी क्षमता दिखाने का अवसर मिलता है.
3. उत्तराधिकार की समस्या - आज भी जहाँ नारी भूमिहर है वहाँ जमीन पर पुरूष का ही अधिकार है. वहीं उसकी सिंचाई के बारे निर्णय लेता है. अतः नारी उसमें भी अपना योगदान देने से वंचित हो जाती है.
4. साक्षरता की कमी - आज भी भारत के कई गॉवों में नारी शिक्षित नहीं हैं इसका सीधा असर उसके मानसिक विकास पर पड़ता है. शिक्षित न होने के कारण उसके आत्म्विश्वास में भारी कमी होती है. जिससे वह अपने विचार प्रभावी ढंग से प्रस्तुत नहीं कर सकती.
5. तकनीकी शिक्षा की कमी - तकनीकी शिक्षा की कमी के कारण नारी उच्च पदों पर कार्य नहीं कर सकती जिससे उनकी भूमिका कम हो जाती है.

समाधान

आज के वातावरण को देखते हुए यह अत्यन्त आवश्यक है कि जल की एक-एक बूँद का भरपूर उपयोग किया जाये, और उसके लिये यह अत्यन्त आवश्यक है कि जल के मुख्य उपभोक्त नारी को जल से जुड़ी समस्याओं के बारे में पूर्ण जानकारी हो जिससे वह जल की एक-एक बूँद को बचा सके. अतः समाधान के लिए निम्न बातों का ध्यान रखाना अति आवश्यक है.

-- नीर का उचित उपयोग.

-- विभिन्न परियोजनाओं में नारी शक्ति का भरपूर उपयोग.

-- योजनाओं से मिलने वाले लाभ का उचित आबंटन.

अतः जल की समस्या से निपटने के लिए नारी को जागरूक करना होगा उसे शिक्षित करना होगा जिला व पंचायत स्तर पर समूह बनाकर जल के भंडारण परन ध्यान देना होगा तभी हम इस समस्या पर काबू पा सकेंगे

उपसंहार

आधुनिक युग में ऐसा नहीं कि नारी ने इस क्षेत्र पर अपना प्रभाव न दिखाया हो. इसका मुख्य उदाहरण गुजरात में पाटन जिले का क्षेत्र जहाँ नारी के योगदान से सूखे पर काबू पाया जा सका. उसी तरह नागपुर में शान्ति नगर का क्षेत्र जहाँ नारी के योगदान के फलस्वरूप हरित क्षेत्र को बढ़ाया जा सका. आज नारी शिक्षित हो रही है. अतः आज नारी की जिम्मेदारी इस क्षेत्र में बढ़ गई है. यदि प्रत्येक नारी जल का सदुपयोग करें एवं उसके भंडारण पर समय रहते विचार करें तो वो दिन दूर नहीं जब जल की समस्या पर कुछ हद तक काबू पाया जा सके. अंत में--

" नीर और नारी दोनों एक समाना,
भेद ये कैसा कोई ना जाना ।
एक है जीवन दायिनी दूजा पालन हार,
दोनों ही हैं जग जीवन के आधार ।।"

* * * * *